मध्यम वर्गको सन्देश

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक: महात्मा गांधी)

भाग १५ सम्पादक: किशोरलाल मशरूवाला सह-सम्पादक: मगनभाओी देसाओी अंक ४२

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० १५ दिसम्बर, १९५१

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

सरदारश्रीकी पहली संवत्सरी

जिस दिन यह अंक प्रकाशित होगा, अुसी दिन सरदारका स्वर्गवास हुअे अेक साल बीत जायगा। दिन कितने जल्दी बीतते हैं? अैसा लगता है मानो हमसे अुन्होंने कल ही बिदा ली हो। अिस चुनावके समयमें कांग्रेसको ही नहीं, किन्तु अन्य पक्षोंको, बहुतसे स्वतंत्र अुम्मीदवारोंको तथा सामान्य मतदाताओंको भी, अुनके मार्गदर्शनका अभाव खटकेगा। आज चुनावके सिलसिलेमें जो अराजकता-सी पैदा हो गअी है, अुसे रोकनेमें सरदारका प्रभाव काफी हद तक मददगार होता।

परन्तु परमेश्वरका नियम अटल है। वह जीवको समाजमें जन्म देता है, पर जब वह जाता है तब समाजको छोड़कर अकेला ही चला जाता है। समाजके बीचमें वह पैदा तो होता है, फिर भी अुसके बिना चला लेनेकी जिम्मेदारी अीश्वरने समाज पर डाली है। जन्म लेनेवालेको अीश्वरका हुक्म है कि तुझे मैं समाजमें भेज रहा हूं और समाजकी सहायतासे ही तुझे गुजारा करना है। अिसलिअे जब तक तेरे शरीरमें प्राण हैं, तब तक तुझे समाजकी सेवा करके अुसका ऋण चुकाना होगा। वैसे ही अीश्वरका समाजको भी हुक्म है कि समाजके बीच भेजे हुअे मेरे दिव्यांशको तुम संभालो तथा अुसका विकास करो। जब तक वह फिर वापिस लौटकर न आ जाय, तब तक अुसका अच्छेसे अच्छा अुपयोग करो। अुसे मैंने ही समाजके बीच भेजा है, और मैं ही अुसे वापिस खींच लूंगा। अिस बीच में देखूंगा कि समाजके प्राणियोंने मेरे अुस अंशका कितना सदुपयोग किया। अुसीके आधार पर समाजको भविष्यमें मेरी मदद मिलेगी। अिसलिअे तुम सावधान रहना।

बापू गये, सरदार गये, बादमें ठक्कर बापा भी चल बसे। अुन सबने समाजके प्रति अपना ऋण अदा करनेमें कोअी प्रयत्न बाकी न रखा था, अैसा अुनके विरोधियोंको भी स्वीकार करना ही पड़ेगा। सबको यह मानना पड़ेगा कि अीश्वरने हमारे जमानेमें महानसे महान ज्योतिर्धरोंको भेजनेकी कृपा की है। ये सब दिव्यांश हमको गुजरातकी तरफसे मिले, यह गुजरात पर अीश्वरका असीम अनुग्रह मानना चाहिये। यह बात सच है कि हमने अुनका बहुत अुपयोग किया और आदर-सन्मान भी किया। परन्तु हमने अुनका सब प्रकारसे और संपूर्ण सदुपयोग ही किया, अैसा विश्वास क्या हम दिला सकेंगे? मैं अुसकी दो कसौटियां मानता हूं। अिन महर्षितुल्य समाज-सेवकोंकी परंपरा टूटनी नहीं चाहिये, और अुचित समय पर अुनकी मृत्युके बाद समाजको अैसा महसूस न होना चाहिये कि वह पंगु बन गया है। हम जिस मात्रामें अिन दोनों कसौटियों पर खरे अुतरेंगे, अुसी मात्रामें हमारा समाज अुन्नत होगा, अैसा समझना चाहिये।

वर्धा, ४-१२-'५१ कि० घ० मशरूवाला
(गुजरातीसे)

दरबार गोपालदास

५ दिसम्बर १९५१ के दिन हृदय-स्तम्भकी बीमारीसे दरबार गोपालदासका देहान्त हो गया और गुजरात-सौराष्ट्रका अेक बड़ा और तेजस्वी देशभक्त अुठ गया। देशी राजाओंमें दरबार गोपालदास ही शायद पहले और अकेले व्यक्ति थे, जिन्होंने असहयोग आन्दोलनके समय गांधीजीका आह्वान सुना और खुलकर अुनका तथा देशका साथ दिया। ब्रिटिश सरकारने अुन्हें अंग्रेजोंके प्रति अुनकी 'गैर-वफादारी' की सजा देनेमें कोअी देर नहीं की, हालांकि अिस सजाको श्री दरबारने पुरस्कारकी तरह लिया। अुन्हें गद्दीसे अुतार दिया गया और अुनके राज-सुलभ विशेषाधिकार छीन लिये गये। अुनकी जगह अुनका अेक चचेरा भाअी गद्दी पर बिठाया गया। सौभाग्य-वश दरबार गोपालदासकी पत्नी श्रीमती भक्तिबा और अुनके लड़के भी अुनकी ही तरह तेजस्वी थे। अुन लोगोंने हमेशा राजनीतिक कार्योंमें अुन्हें पूरा साथ दिया। अुनका राज्य कोअी बड़ा नहीं था, काठियावाड़के तीन छोटे-छोटे और अेक दूसरेसे अलग तालुकों पर ही अुनका स्वामित्व था। लेकिन अिस छोटे क्षेत्रमें वे अत्यन्त लोकप्रिय थे, क्योंकि अपने दिन-प्रतिदिनके व्यवहारमें वे पूरे जनवादी थे। वे अपनी किसान जनताके साथ घुल-मिलकर काम करते, गाते और रास-गरबामें भाग लेते थे और अुनमें से प्रत्येकको खुद जानते थे।

गद्दीसे अुतार दिये जाने पर भी अुनके अुत्साहमें कोअी कमी नहीं आअी। श्रीमती भक्तिबा और अपने वयप्राप्त लड़कोंके साथ वे कांग्रेस द्वारा चलाये गये प्रत्येक सविनय-कानून-भंग आन्दोलनमें भाग लेते रहे और बार-बार कारावासकी लम्बी कैद भोगते रहे। राजपरिवारके व्यक्ति होनेके नाते, जेलमें अुन्हें कभी विशेष सुविधाअें नहीं मिलीं। और न अुन्होंने कभी अुसकी कोशिश की।

वे हरिपुरा कांग्रेसकी स्वागत-समितिके अध्यक्ष थे, और कअी वर्षों तक सौराष्ट्रकी प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष रहे। स्त्री-शिक्षामें वे काफी दिलचस्पी लेते थे और विट्ठल कन्या-विद्यालय, नड़ियाद तथा वल्लभ कन्या-विद्यालय, राजकोटके प्राणरूप थे।

श्री दरबारके स्वभाव-निहित अिन अनेक सद्गुणोंको बाहर लाने और अुनके विकासमें श्रीमती भक्तिबाका बड़ा हाथ था, और अुसका बहुत कुछ श्रेय अुन्हें दिया जा सकता है। ब्रिटिश सरकारने दूसरे राजकुमारोंकी तरह अुन पर भी अपनी कुशिक्षाका रंग चढ़ानेमें कोअी कमी नहीं की थी। दूसरे राजकुमारोंकी तरह अुन्हें भी अैश-आरामका जीवन बिताने और अपनी बुद्धिको जड़ बना डालनेकी ही तालीम दी गयी थी। लेकिन श्रीमती भक्तिबाका पालन अेक बहुत धार्मिक परिवारमें सादगीके वातावरणमें हुआ था और अुन्होंने धीरे-धीरे अपने प्रेमके कोमल प्रभावसे अुनके अेकके बाद अेक सारे व्यसन छुड़ा दिये। परिणाम यह हुआ कि ज्यों-ज्यों व्यसन छूटते गये, त्यों-त्यों अुनके सद्गुण निखरते गये और वे गुजरात-सौराष्ट्रके अत्यंत प्रिय नेताओंमें से अेक हुअे।

www.vinoba.in

दरबार गोपालदास बहुत अच्छे कातनेवाले थे। अुनका सूत मेरा खयाल है ४० अंकसे कम तो कभी होता ही नहीं था, अकसर वह ६० अंकसे अूपर ही जाता था। मैं नहीं जानता कि अिन वर्षोंमें अुन्होंने अपना यह अभ्यास किस हद तक कायम रखा था।

अुनके चले जानेसे सौराष्ट्रकी बहुत बड़ी क्षति हुअी है। चुनावके अिन दिनोंमें तो अुनका अभाव बहुत अखरेगा। लेकिन हमें अपने अुत्तम साथियोंके न रहने पर भी अविचलित चित्तसे अपना काम करते रहना सीखना ही चाहिये।

वर्धा, ७-१२-'५१ कि० घ० मशरूवाला

(अंग्रेजीसे)

विनोबाकी अुत्तर भारतकी यात्रा—७

कुर्रअी

टीकमगढ़से चलकर हमारा अगला मुकाम टीकमगढ़से १२ मील दूर कुर्रअीमें हुआ। गांवके लोगोंने विनोबाके लिअे अेक नयी कुटिया तैयार कर दी थी। रास्तेमें जगह-जगह हमें कमलके फूल भेंट किये गये थे। मितू (श्री० आशाबहन आर्यनायकम्‌की कन्या) ने अुनसे कुटियाको सजा दिया। आसपासके गांवोंसे भजन-मंडलियां गाती हुअी चली आ रही थीं और हम देख सकते थे कि अुनके शब्द और स्वर सुनकर विनोबाका हृदय भर आया है। अेक गीतकी कथा थी: "भक्तजन श्रीकृष्णके दर्शनोंके लिअे मथुरा जाना चाहते हैं।" विनोबाने कहा: "मैं भी मथुरा जा रहा हूं, लेकिन मेरे कृष्ण सिर्फ मथुरामें नहीं हैं। मैं तो जहां जाता हूं, वहीं मुझे मेरे कृष्णके दर्शन हो जाते हैं। तुम सब मेरे कृष्ण हो और मैं तुम्हारे दर्शनके लिअे आया हूं।"

अिसके बाद वे गांव देखनेके लिअे गये। अुन्होंने देखा कि गांवमें कोअी घर अैसा नहीं है, जिसमें वे सीधे खड़े हो सकें। कोअी घर अैसा नहीं था, जिसमें सूर्यकी किरणें अबाध रूपसे प्रवेश कर सकती हों।

अेक घरमें देहाती टोकनीके झूलेमें अेक शिशुको देखकर अुन्होंने कहा: "झूलेमें झूल रहा यह शिशु ही मेरा कृष्ण है।"

गांवोंका वातावरण तेलंगाना-यात्राकी याद करानेवाला था। आपसी शिकायतें आती थीं। अेक विधवा बहिन रोती हुअी आयी और बोली: 'मेरे पतिके अेक मित्रने मेरी जमीन जबरदस्तीसे छीन ली है, और अपने नाम पर अुसकी रजिस्ट्री भी करा ली है।'

विनोबाने अुस भाअीको पूछा, तो अुसने अपना दोष स्वीकार कर लिया। तब विनोबाने अुससे कहा कि वह जमीन मुझे भूदानमें दे दो, और वह राजी हो गया। अिस तरह कितने ही झगड़ोंका निपटारा हुआ।

पृथ्वीपुर

पृथ्वीपुरमें आदिवासियोंका अेक प्रतिनिधि-मंडल विनोबासे मिलनेके लिअे आया। राजाके शासनमें अुन्हें अींधनके लिअे लकड़ी काटने और मछलियां पकड़ने तथा जंगली शहद तोड़नेकी सुविधा थी। अुस पर किसी तरहकी सरकारी रोक-टोक या कर नहीं था। अब नये शासनमें अुनकी यह सुविधा समाप्त हो गयी थी। सरकार अपनी आयके साधनोंके प्रति असावधान कैसे रह सकती है? कर तो अुसे लगाना ही पड़ता है। प्रतिनिधि-मंडल चाहता था कि कर न लगाया जाय। मालूम हुआ कि कर सचमुच बहुत ज्यादा है।

जेबरा

घास और कीचड़से भरा दुर्गम रास्ता पार करके करीब ८ बजे सुबह हम लोग जेबरा पहुंचे। विनोबाजीने विन्ध्यप्रदेशके भूतपूर्व शिक्षा-मंत्री श्री पाठकसे, जो अिस प्रदेशमें हमारी यात्राकी व्यवस्था कर रहे थे, पूछा: "पाठकजी, अिस गांवमें आप पहले कितनी बार आये हैं?" पाठकजीकी आंखें डबडबा आयीं, और अुन्होंने भरे गलेसे जवाब दिया: "मैं अपना दोष स्वीकार करता हूं। लेकिन आपने रास्ता दिखा दिया है, और हमें कार्यक्रम भी दे दिया है। अब हम गांव-गांव घूमेंगे और आपका संदेश घर-घर पहुंचायेंगे। और मुझे यह सोचकर बड़ा आनन्द होता है।"

लोगोंने सहकारी खेतोंके बारेमें सवाल किया, तो विनोबाने अुन्हें अुसके संभव दुष्परिणामोंके बारेमें आगाह किया। छोटे-छोटे किसानोंके छोटे-छोटे खेत फिर नहीं रहेंगे। अुनकी जगह बड़े-बड़े किसान आ जायंगे। छोटा किसान, जो कल तक अपनी जमीन जोतता था और अुसकी समृद्धिमें अपनी बुद्धि और योग्यताके अुपयोगका आनन्द पाता था, बेजमीन हो जायगा। अपने अनुभव और कल्पनाके अुपयोगका कोअी अवकाश फिर अुसे नहीं मिलेगा। तब अुसे बड़े किसानकी आज्ञामें मजदूरकी तरह काम करना पड़ेगा। अिस बेजमीन किसानमें और हल खींचनेवाले बैलमें फिर कोअी फर्क नहीं रह जायगा। कहनेकी आवश्यकता नहीं कि विनोबाजी प्रचलित सहकारी पद्धतिके समर्थक नहीं हैं। वे आंशिक सहकार चाहते हैं, जिसमें जमीन पर किसानका अपना अधिकार बना रहता है।

निवाड़ी

अिसके बाद हम लोग निवाड़ी पहुंचे। विंध्यप्रदेशमें हमारी यात्रा अब समाप्त होने पर आ गयी थी। निवाड़ीके बाद दतिया पहुंचकर वह पूरी हुअी। रास्ता और ज्यादा कठिन हो गया था, पगदंडी भी यहां नहीं थी। खेतोंकी लंबी हरी घासमें से छोटे-मोटे नाले पार करते हुअे हम लोग आगे बढ़ रहे थे। रास्ता रपटीला था और हरअेक कदम सावधानीसे रखना पड़ता था। विनोबाजी खुद दो-तीन बार गिरते-गिरते बचे।

विन्ध्यप्रदेशकी जनसंख्या करीब ३६ लाख है। विन्ध्यके लिअे भूदानका अंश निश्चित करना था। मध्यप्रदेशने अेक लाख अेकड़का निर्णय किया था और अुत्तरप्रदेश अेक करोड़ अेकड़ करनेवाला है। लेकिन विनोबाजी विन्ध्यके कार्यकर्ताओं पर अुनकी शक्तिसे ज्यादा बोझ नहीं डालना चाहते थे। अेक भाअीने २५००० अेकड़का सुझाव रखा। विनोबाने ३६००० अेकड़का प्रस्ताव किया और कार्यकर्ताओंने यह संख्या मंजूर कर ली। अिस कामके लिअे पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी, लालाराम बाजपेयी, और श्री चतुर्भुज पाठक (संयोजक) — अिन तीनकी समिति बनायी गअी।

प्रार्थना-प्रवचनमें विनोबाने अिस बात पर खुशी जाहिर की कि वे विन्ध्यप्रदेशमें आये। अुन्होंने कहा, यहां न आया होता, तो अेक बड़े अनुभवसे मैं वंचित रह जाता। अेक बड़ा लाभ यह भी हुआ कि यहांके कुछ कार्यकर्ताओंसे मेरा सम्पर्क हो गया। हैदराबादमें मेरी सफलताका माप लोग वहां कितने अेकड़ जमीन मिली, अिस आधार पर करते हैं। पर मेरी कसौटी दूसरी है। मैं देखता हूं कि मुझे कितने कार्यकर्ता मिले। मैं तो यह सोचकर प्रसन्न होता हूं कि अिस यात्राके बाद मेरे पास वहां कम-से-कम छः कार्यकर्ता हो गये हैं। अिसी तरह विन्ध्यप्रदेशमें अपना मुख्य लाभ मैं यही मानता हूं कि यहां कुछ अैसे कार्यकर्ता हैं, जिनसे मैं कामकी आशा कर सकूंगा।

अपने कामका महत्त्व समझाते हुअे विनोबाने कहा: "लोग क्रांतिकारी कार्यक्रमकी बात करते हैं और सोचते हैं कि क्रांति बिना खून बहाये नहीं हो सकती। मैं यह विचार स्वीकार नहीं करता। जो लोग अैसा मानते हैं कि खून बहाये बिना क्रांति हो ही नहीं सकती, वे सचमुच क्रांतिवादी हैं ही नहीं। वे 'जैसे-थे-वादी' ही हैं। अुनका अुद्देश्य क्रांति नहीं है, वे सिर्फ जगहें बदलना चाहते हैं। आजके सुखी लोगोंकी जगह दुखियोंको देना चाहते हैं, और दुखी लोगोंकी जगह सुखियोंको

www.vinoba.in

रखना चाहते हैं। लेकिन यह क्रांति नहीं है। अिससे आजकी व्यवस्थामें कोअी फर्क नहीं आयगा। केवल यह होगा कि सुखी दुखी हो जायंगे, और दुखी सुखी हो जायंगे। लेकिन दुःख तो तब भी बाकी रहेगा। अुसे वे निःशेष नहीं कर सकेंगे। अिसीलिअे मैं अिसे 'जैसे-थे-वाद' कहता हूं। क्रांतिका अर्थ तो यह होना चाहिये कि सब लोगोंको निरपवाद रूपसे सुख मिले। मैं सर्वोदयमें विश्वास करता हूं, सार्वजनिक कल्याण चाहता हूं और अिसलिअे मैं क्रांतिवादी होनेका दावा करता हूं। जो समाजको दो वर्गोंमें बांटना चाहते हैं, वे अपनेको कम्युनिस्ट या और कोअी मनचाहा 'अिस्ट' कहें, परंतु मेरी नम्र रायमें तो वे कम्यूनलिस्ट या सम्प्रदायवादी ही हैं। पश्चिमके लोग 'अधिकतम लोगोंका अधिकतम हित' (greatest good of the greatest number) की भाषामें सोचते हैं, अुनका मन अिसी परम्परामें दीक्षित हुआ है। लेकिन भारतीय मानसको बचपनसे ही विश्वमैत्रीका, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का संस्कार मिलता है। अुसे भूतमात्रसे प्रेम करना सिखाया जाता है, चाहे वह सेवा बहुत कमकी, अिने-गिने लोगोंकी ही कर सके। अेक समय था, जब मुठ्ठी भर लोग बहुसंख्यक जनताके बल पर मौज करते थे, और आज यह परिस्थिति पैदा हुअी है कि बहुसंख्यक लोग अल्पसंख्यक लोगोंके बल पर सुखी होना चाहते हैं। लेकिन भारतमें अिसके विपरीत, हमें यह सिखाया जाता है कि हम हरअेकके प्रति वैसा व्यवहार करें, जैसा हम अपने प्रति चाहेंगे। गीताकी भाषामें अिसे 'आत्मौपम्य' कहते हैं। मैं अिसी आधार पर सारे समाजकी नयी रचना करना चाहता हूं। और अिसलिअे मैं कहता हूं कि मेरा तरीका क्रांतिका है। मधुमक्खी फूलोंसे शहद अिकट्ठा करती है, पर फूलोंको कोअी नुकसान नहीं पहुंचाती। मैं भी अपना अुद्देश्य अिसी तरह, दूसरोंको तकलीफ पहुंचाये बिना, सम्पादित करना चाहता हूं। और हृदय-परिवर्तनके सिद्धान्तमें हमारा विश्वास हो, तो यह हो सकता है। तो मैं कोअी नअी चीज नहीं कर रहा हूं, हमारे सन्तोंकी ही शिक्षा पर चल रहा हूं। मुझे अिसमें कोअी सन्देह नहीं है कि यह अहिंसक क्रांति अगर भारतमें सिद्ध नहीं हुअी, तो दुनियामें अन्यत्र कहीं अुसके सिद्ध होनेकी आशा नहीं है।"

अुपसंहार करते हुअे विनोबाने कहा: "भगवान मुझे मेरी पात्रतासे कहीं अधिक सफलता दे रहा है। मैं जानता हूं कि ज्यों-ज्यों मेरी चित्त-शुद्धि बढ़ेगी, त्यों-त्यों सफलताकी मात्रा भी बढ़ेगी।"

और अन्तमें जनताको भूदानके लिअे अुत्साहित करते हुअे कहा:

"भूदानके अिस यज्ञमें जब तक आप अपना भाग नहीं देते, तब तक आप अिस दीवालके बाहर न जायं।" और वे लोग सचमुच तब तक अुसके बाहर नहीं जा सके। यह दुस्तर दीवाल क्या ईंट-पत्थरकी सामान्य दीवाल थी? नहीं, वह प्रेमकी दीवाल थी, प्रेमकी अनुल्लंघनीय दीवाल। विनोबाकी वाणी अुनके हृदयमें प्रवेश कर गयी और वे अेकके बाद अेक खड़े हुअे।

और अेकके बाद अेक दानकी अनेक घोषणाअें हुअीं। ७५ श्रेयार्थियोंने १२५० अेकड़ दिये। अिनमें कटेरा (झांसी जिला) के राजा बहादुरसिंहजीका नाम अुल्लेखनीय है, जिन्होंने १००० अेकड़ दिये।

अपूर्व दृश्य था, जिसे हम कभी भूल नहीं सकते। सचमुच प्रेमकी दीवालको कौन लांघ सकता है? प्रेमका यह बंधन बहुत कोमल है, लेकिन बहुत कठिन भी है। अुसे कौन तोड़ सकता है? प्रेमके अिसी कोमल सूत्रसे अेक समय कृष्णने मीराको बांधा था, और मीरा हमेशाके लिअे बंधी रह गयी:

"काचे रे तांतणे हरिजीअे बांधी,
जेम खेंचे तेम तेमनी रे।"

बिरधा (७-१०-'५१) से निवाड़ी (१५-१०-'५१) तक ग्रामवार भूमिदानकी सूची अिस तरह है:

गांवका नाम	भूमि–अेकड़
बिरधा	४५० "
ललितपुर	११०० "
खितवांस	२२५ "
महरौनी	६६० "
टीकमगढ़	३१७.५० "
कुर्रअी	३३.३२ "
जेवरा	१०८.०६ "
पृथ्वीपुर	१००.४८ "
निवाड़ी	२५७.९० "
कुल	३२५२.२६ "

(अंग्रेजीसे) दा० मूं०

बहिष्कार आन्दोलनकी ओर

अिधर कुछ महीनोंसे चरखा और ग्रामोद्योगके काम करनेवालोंको, कम-से-कम, खाने-कपड़ेके लिअे मिल-सामानका बहिष्कार आन्दोलन चलानेके बारेमें मैं कहता रहा हूं। धीरे-धीरे अुसकी आवश्यकताकी ओर देशके रचनात्मक कार्यकर्ताओंका ध्यान आकर्षित होने लगा है, यह खुशीकी बात है। कांग्रेसके घोषणापत्र तथा सरकारी पंचवार्षिक योजनाके मसविदेके प्रकाशनके बाद, स्वभावतः सर्वोदय-विचारके लोगोंके लिअे अिस दिशामें अुदासीन रहना संभव नहीं है। अतः आज जगह-जगह कताअी-मंडल संमेलनोंमें खाने तथा कपड़ेके सामानके बारेमें मिलकी चीजोंका बहिष्कार करनेका संकल्प किया जा रहा है।

कुछ लोग कहते हैं: 'बहिष्कार क्यों?' अुनसे मेरा प्रश्न है: 'खादी क्यों?' खादी-कार्यके दो ही हेतु हो सकते हैं। प्रथम यह कि देशमें बहुत बेकार हैं। अुनको किसी प्रकारसे काम देनेके लिअे चरखा और करघा अेक बहुत बड़ा जरिया है, अिसलिअे चरखेका कार्य करना है। दूसरा यह कि दुनियामें शोषणहीन तथा शांतिपूर्ण समाज कायम करनेके लिअे यह आवश्यक है कि कम-से-कम मौलिक आवश्यकताओंके लिअे केंद्रीय यंत्रवादी अुत्पादन पद्धतिको समाप्त कर विकेंद्रित स्वावलंबी अुत्पादन पद्धतिको कायम किया जाय। जिनका हेतु पहले प्रकारका है, अुनको केवल अितना ही सोचना होगा कि कौनसे अुपायसे अधिक-से-अधिक लोगोंको रोजी दी जा सकती है। लेकिन हम लोगोंको, जो कि खादी द्वारा दूसरा मकसद हासिल करना चाहते हैं, तो हर हालतमें खाने और कपड़ेके बारेमें मिल-बहिष्कार आन्दोलन चलाना ही होगा। अिसके सिवा दूसरा मार्ग नहीं है।

लेकिन अिस बारेमें सिर्फ भावना प्रकट करना या प्रस्ताव पास करना काफी नहीं है। अिसके लिअे संयोजित चेष्टा करनी होगी। अतअेव जो भी रचनात्मक कार्यकर्ता अिसको मानते हैं, अुन्हें खाने और कपड़ेके बारेमें यंत्रोद्योगका बहिष्कार और ग्रामोद्योगका स्वीकार सूचक संकल्प-पत्र बनाकर खुद और मित्रोंसे संकल्प करानेका कार्यक्रम प्रारंभ कर देना चाहिये। कितने लोग अिस संकल्पको ले रहे हैं, अुसका अहवाल भी 'सर्वोदय', 'हरिजन' और कताअी-मंडल पत्रिकामें प्रकाशित करनेके लिअे यहां भेजना चाहिये।

सेवाग्राम,
२०–११–'५१

धीरेन्द्र मजूमदार

www.vinoba.in

हरिजनसेवक
१५ दिसम्बर १९५१

मध्यम वर्गको संदेश

[अखिल गुजरात विद्यार्थी–कांग्रेस, वालोड़के ५वें अधिवेशनके अवसर पर अखिल भारत चरखा संघके अध्यक्ष श्री धीरेन्द्र मजूमदारने नीचे दिया हुआ संदेश भेजा था। यद्यपि वह विद्यार्थियोंके नाम था, फिर भी दरअसल मध्यम वर्गके हरअेक व्यक्तिके सोचने लायक है।]

आज संसारमें जो घोर अशांति है, अुसका कारण है सामाजिक शोषण। अिस शोषणका स्वरूप है वर्ग-विषमता। समाजके हजूर और मजदूरके दो वर्गोंमें विभाजित होनेके कारण, हजूर-वर्ग लगातार मजदूर-वर्गका शोषण करता रहा है। यह शोषण-पद्धति नयी नहीं है। शरीरश्रमसे अुत्पादन करनेवाले मजदूरकी संपत्ति दलाली करके खानेवाले हजूरके पास चले जानेकी परिपाटी कबसे शुरू हुअी है, यह जानना कठिन है। लेकिन अिस परिपाटीका विकास होते-होते दुनिया आज अैसी स्थितिमें पहुंच गयी है कि अिस विषमताकी आगसे समाज भस्म होना चाहता है।

अिस परिस्थितिसे निकलनेके लिअे संसार भरकी मानवता पुकार रही है। यही कारण है कि दुनियामें चारों ओरसे वर्गहीन समाजकी मांग आ रही है। यही बात सब विद्यार्थी-समाज मानते हैं। लेकिन वे जो बात नहीं मानते हैं, अुस दिशामें भी आपको विचार करना होगा। वे यह तो मानते हैं कि मजदूरके कंधे परसे हजूर अुतर जाय या मजदूर हजूरको अपने कंधे पर से नीचे पटक दे; और अिसके अनुसार पूंजीपतिका नाश हो, यह नारा लगाते हैं। लेकिन अुन्हें वर्ग-विषमताका असली स्वरूप मालूम होना चाहिये। शोषणका नकशा यह है कि शरीरश्रमसे अुत्पादन करनेवाले मजदूरके कंधे पर व्यवस्थापक नामधारी बाबू यानी छोटे हजूर बैठे हुअे हैं। अुनके कंधे पर बड़ा हजूर यानी पूंजीपति बैठा है। आज यह छोटे हजूर चाहते हैं कि हमारे कंधे परसे यह बड़े हजूर तो हट जायं, लेकिन हम मजदूरके कंधे पर बैठे रहें। अैसा न्याय नहीं चल सकता। संसारमें अेक ही न्याय चलेगा, कंधे पर बैठनेका या अुतरनेका। अगर बाबू लोग चाहते हैं कि वे मजदूरके कंधे पर बैठे रहें, तो अुन्हें अपने कंधे पर बड़े हजूरको बैठाना होगा; और अगर वे चाहते हैं कि अुनके कंधे परसे पूंजीपति अुतर जाय, तो अुन्हें भी मजदूरके कंधे पर से अुतरकर शरीरश्रमका काम करना होगा।

आप सब विद्यार्थी अधिकांशमें अिस छोटे हजूर वर्गके हैं। अगर आप चाहते हैं कि समाजमें समताकी प्रतिष्ठा हो, तो आप सबको अपना वर्ग परिवर्तन कर मजदूर बनना होगा।

मुझे आशा है कि अिन बातों पर ध्यान रखकर आप अपना कार्यक्रम निर्धारित करेंगे।

सेवाग्राम, २३-११-'५१ धीरेन्द्र मजूमदार

सरदार वल्लभभाअी
[पहला भाग]
लेखक : नरहरि परीख
अनु० रामनारायण चौधरी
कीमत ६–०–० डाकखर्च १–३–०
नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद–९

कांग्रेसके विरोधकी माया

आज अेक खास वर्गके लोगोंने जहां-तहां कांग्रेसकी फजीहत अुड़ाने और अुसकी निन्दा करनेका अपना धन्धा ही बना लिया है। ये लोग जीवनमें कुछ न कुछ सफलता पाये हुअे या आगे बढ़े हुअे माने जायं अितने पढ़े-लिखे या साधन-संपन्न लोग ही होते हैं। और साधारण जनता बहुत समयसे अुन्हींके सामने मार्गदर्शनके लिअे देखती आअी है, अुसे अैसी आदत पड़ गअी है। अिसलिअे अूपरके लोगोंके खिलाफ जनतामें से कोअी विरोधी आवाज निकल भी नहीं सकती। लेकिन साधारण जनता यह समझती तो जरूर है कि कांग्रेस और अुसकी सरकारोंके प्रत्यक्ष कामोंसे वैसा कुछ दिखता नहीं, जैसा कि अुनका विरोध और निन्दा करनेवाले लोग कहते हैं। अिसलिअे जनता परेशान होती है और अुलझनमें पड़ जाती है। अूपरी वर्गोंको आज अिस स्थितिका लाभ यह है कि वे चुनावमें जीत सकते हैं।

संभव है यह चित्र शायद अेकतरफा मालूम हो। लेकिन थोड़े विचारसे पता चलेगा कि दरअसल अैसी बात नहीं है। पिछले युगमें जैसे हम ब्रिटिश राज्य और ब्रिटिश लोगोंके बीच फर्क करके चलते थे, अुसी तरह कांग्रेस और अुसमें काम करनेवाले तरह-तरहके चित्र-विचित्र लोगोंके बीच आज जनताको फर्क करना चाहिये। कांग्रेस आज भी वैसी ही प्रजावत्सल और सेवाभावी संस्था है। अुसने गरीबोंका स्वराज कायम करनेका अपना ध्येय अभी छोड़ा नहीं है। अिस पर कांग्रेस और अुसकी सरकारें आज भी कायम हैं। दुःखकी बात यह है कि चूंकि अब देशमें राजसत्ता लोगोंके हाथमें आ गअी है, अिसलिअे कांग्रेसके जरिये अुसका कब्जा लेनेके लिअे अुसमें तरह-तरहके लोग घुसनेकी ताक लगाये बैठे हैं। और अेक दूसरा वर्ग अैसा खड़ा हुआ है, जो अैसा करनेमें सफलता न मिलने पर तरह-तरहकी अनुचित युक्तियों द्वारा जनताको गुमराह करने और कांग्रेसके खिलाफ भड़कानेका काम करता है। कांग्रेसके लिअे यह सचमुच अेक बहुत बड़ी आपत्ति है, लेकिन अभी तो वह अुस पर विजय पा रही है। चुनावका मौका देखकर अुसे छकानेका प्रयत्न करनेवाले पैदा जरूर हुअे हैं, लेकिन अुन्हें समझ लेनेमें जनताको देर नहीं लगेगी। किस-किस ढंगसे लोग कांग्रेसको बदनाम करते हैं, अिसका अेक नमूना अेक पत्रमें देखनेको मिला, जो ध्यान देने लायक है। अेक भाअी लिखते हैं:

> "मैं गांवका रहनेवाला हूं। पढ़ा-लिखा तो कम हूं, लेकिन मैंने अपनी समझके अनुसार लिखा है। कंट्रोलका माल लेनेवाले ही कांग्रेसको बदनाम करते हैं। यहां और आसपासकी जगहोंमें गांवके अगुआ लोग लोहे, सीमेन्ट, टीन, कपड़े वगैराका लाभ तुरन्त अुठा लेते हैं। बादमें जिन्हें अुनकी जरूरत होती है, अुनसे आकर बात करते हैं। अिस तरह कांग्रेसके राजमें गरीबोंकी कोअी सुनता नहीं। ये लोग ही गांवके अगुआ हैं। तो क्या गरीबोंकी मदद करना अिनका फर्ज नहीं? लेकिन स्वार्थके सामने सब भूल जाते हैं।"

अैसे स्वार्थी लोगोंमें यदि खुदको कांग्रेसी कहलवाने या मनवानेवाले लोग भी हों, तो आज कांग्रेसके अधिकतर विरोधका कारण अैसे लोग ही हैं। अुनसे निपटनेकी ताकत संस्थाके नाते कांग्रेसको बतानी चाहिये। और जनता अैसे दंभी लोगोंसे जवाब तलब करे, लेकिन साथ ही कांग्रेसकी सच्ची परीक्षाकी भी न भूले, अितना विवेक भी जनतामें पैदा करना चाहिये। अैसे लोगोंको भी यह समझना चाहिये कि पेटकी खातिर वे राष्ट्रको न डुबोवें। अूपर बताये हुअे वर्गके लोगोंकी अैसी स्वार्थी दृष्टि और अूटपटांग काम देशमें आज काफी कष्टको जन्म दे रहे हैं और अुपद्रव मचा रहे

www.vinoba.in

हैं। यह स्पष्ट है कि जनता अुनका सफलतापूर्वक सामना कर सकेगी, तो ही भारतके स्वराजकी प्रगति हो सकेगी।

अहमदाबाद, २-१२-'५१ **मगनभाअी देसाअी**

(गुजरातीसे)

विनोबाकी तेलंगाना-यात्रा

९

सातवां मुकाम

[ता० २१-४-'५१: वाविळापल्ली: १२ मील]

सरवैलसे वाविळापल्लीका सीधा रास्ता सात मील ही था, परन्तु बीचमें नारायणपुरके लोगोंने चाहा कि विनोबाजी अुनके गांवसे होकर जायं। विनोबाने छः मीलका चक्कर कबूल कर लिया, क्योंकि गांववालोंने कुछ भूदान दिलवानेका वचन दिया था।

बड़े सवेरे ठीक पांच बजे सरवैलसे रवाना हुअे। दिन निकलते ही नारायणपुर पहुंचे। सामनेसे हवा खूब जोरोंसे चल रही थी, लेकिन अुसकी शीतलता अुत्साहप्रद थी। गांव पुरानी राजधानीका था, अिसलिअे कोट, किला, दरवाजे, सड़कें सभी कुछ था। परन्तु अितने सवेरे भी सब बिलकुल साफ-सुथरा। कअी जगह आमके तोरण और कमानें।

रोगकी दवा भी और फीस भी

गांवमें बस्ती मुसलमानोंकी अधिक थी। भूदानमें चौवन अेकड़ अड़तीस गुंठा जमीन मिली। अेक ही सज्जन — मुसलमान भाअीने दी।

दान स्वीकारते हुअे विनोबाने चंद शब्द कहे:

"आपके गांवमें आना नहीं था, बल्कि दूसरी तरफसे जाना था। लेकिन छः मीलका चक्कर स्वीकार करके भी मैं अिधरसे आ गया, क्योंकि आपके गांववालोंकी बहुत अिच्छा थी। मैंने भी मेरे गरीब भूमिहीन भाअियोंके लिअे कुछ सौदा कर लिया और आना कबूल कर लिया!"

फिर अेक हकीमकी तरह तेलंगानाकी हालतकी चिकित्सा करते हुअे कहा:

"हमारे गांवोंको अेक बड़ाभारी रोग हो गया है। श्रीमान् गरीबोंको चूसते हैं। हमने सोचा कि अिस बीमारीकी दवा होनी चाहिये। श्रीमान् अगर जमीनोंका दान करते हैं, तो रोगकी दवा भी होती है, और हमारी फीस भी वसूल होती है। यानी दवा और फीस दोनों अेक ही हैं।

"हमें खुशी है कि आप लोगोंने यहांके हरिजनोंके लिअे दान देना स्वीकार किया। अिसी तरह सब लोगोंको चाहिये कि अपने गांवोंकी फिकर करें। पांच अंगुलियोंकी तरह हम समाजमें पांच भाअी हैं; और ये पांच अंगुलियां समान तो नहीं होतीं। छोटी-बड़ी होती हैं, लेकिन सब मिलकर काम करती हैं। अुसी तरह गांवमें कुछ छोटे, कुछ बड़े लोग रहते हैं। सब मिलकर काम करें, तो सब सुखी होंगे।

मैं आशा करता हूं कि आज जो काम हुआ है, वह अेक प्रारंभ है। वह आगे बढ़ेगा। यहीं खत्म नहीं होगा।"

पोतना महाकविके भू-भागमें

अभी हमने अूपर कहा है कि नारायणपुर पुरानी राजधानीका गांव है, जिसके अवशेष आज भी नजर आते हैं। नारायणपुरकी राजकोंडा पहाड़ीमें ही तेलगूके प्रसिद्ध कवि पोतनाको राजाने गिरफ्तार कर रखा था और चाहा था कि पोतना अपना महान् ग्रंथ राजाको समर्पित करे। पोतना अेक किसान थे, किन्तु जितने महान् विद्वान, अुतने ही परम भक्त और वैसे ही निःस्पृह भी। अुन्होंने राजाकी बात माननेसे अिनकार कर दिया था!

विनोबाने जगह-जगह चर्चाओंमें और अपने व्याख्यानोंमें पोतनाकी भागवत पढ़नेके सम्बन्धमें कार्यकर्ताओंका ध्यान आकर्षित किया था। हिन्दीमें रामचरितमानसका जो स्थान है, वही तेलगूमें पोतनाकी भागवतका है। किन्तु कार्यकर्ताओंकी सभामें जब विनोबाने अेक बार पूछा कि अुसे कौन-कौन पढ़ते हैं, तो पचासमें से सिर्फ अेक ही भाअीने हाथ अूंचा किया। 'जो किताब सबके दिलों पर असर करती है, यानी जनताकी है,' अुसे न पढ़नेवाले कार्यकर्ताओंको देखकर विनोबाको बहुत आश्चर्य हुआ। चित्त-शुद्धिके लिअे संत-वचनोंके नित्य स्वाध्यायका महत्त्व विनोबाने कार्यकर्ताओंको समझाया। अुसके अभावमें कर्तृत्व-शक्ति कैसे क्षीण होती है, यह भी समझाया। अिसके अलावा, जिस किताबने जनतामें काम किया है और जनताके दिलों पर जिसका असर है, अुस किताबसे अगर हमारे कार्यकर्ताओंका सम्बन्ध न हो, तो कार्यकर्ता ग्रामोंकी क्या सेवा करेंगे? ग्रामोंकी सेवा करनेके लिअे ग्रामवासियोंकी पवित्र भावनाओंके साथ हमारा हार्दिक सम्बन्ध जुड़ जाना चाहिये।

पोतनाकी रसवन्ती भारती

सारी यात्रामें तेलंगानाके जो चार-छः कार्यकर्ता हमारे साथ थे, अुनमें श्री केशवराव, श्री कीदंड रेड्डी और श्री रामकृष्ण रेड्डी तो पोतनाके बड़े भक्त थे। नित्य पोतनाकी जीवनीकी अनेक बातें रास्तेमें हम सबको सुनाते और बीच-बीचमें अुनके ग्रंथ—भागवत—से कितना ही हिस्सा गाते भी। सारा भागवत मानो अिन लोगोंने अपने कंठमें समा रखा था। रास्ते भर सांस्कृतिक वातावरण बना रहता। बहुत अच्छा लगता। आज तो सारे रास्ते पोतनाकी ही चर्चा चल रही थी। साथ-साथ पहाड़ी चलती थी, और चलती थी पोतनाकी कहानी और अुनकी रसवंती भारती।

अिन पहाड़ियोंमें आज भी कम्युनिस्ट रहते हैं, अैसा लोगोंका खयाल है। अुनके अड्डे वहां हैं। अुनमें गोला-बारूद, स्टेनगन, रेडियो आदि साहित्य भी रहता है। आगे वाविळापल्ली तक सारा प्रदेश पहाड़ी था। छोटी-छोटी और कुछ मुक्त पहाड़ियां — चारों ओरसे घिरी हुअीं — अेकके बाद दूसरी अैसी लगती थीं, मानो अेक-अेक कमलदल धीरे-धीरे विकसित होता हुआ हमारे सामने प्रगट हो रहा था, और हमें आगे बढ़ाकर खुद पीछे हटता जा रहा था। कमलिनीमें बन्द हो जानेवाले भृंगराजकी क्या अवस्था होती होगी, यह कहना कठिन है। क्योंकि वहां तो वह गिरफ्तार हो जाता है और यहां हम मुक्त-मनसा आगे बढ़ते जा रहे थे।

वात्सल्यके दर्शन

रास्तेमें अकसर अेकसे अधिक बार विनोबा जल पीते हैं। पानीकी दो थैलियां दो साथियोंके पास रहती हैं। अेक थैलीका पानी समाप्त होने पर दूसरी थैलीसे दिया जाता है। आज विनोबाने पानी मांगा, तो दोनोंने अेक साथ प्यालोंमें पानी भर दिया। वात्सल्यमयी मदालसाने अपनी डायरीमें अिस प्रसंगका वर्णन लिख रखा है: "दोनोंको अेक साथ पानी अुंड़ेलते देखा तो मुझे लगा कि माता यद्यपि अेक समय अेक ही स्तनसे बालकको दूध पिलाती है, परन्तु दूधकी धारा तो दोनोंमें अेक साथ ही भर आती है!"

अैसे अनेक सुखद प्रसंग और भाव नित्यानुभूतिके विषय बन गये हैं। खुद विनोबाने कहा: "अिस पैदल यात्रामें जो आध्यात्मिक और गहरे अनुभव मुझे मिल रहे हैं, अुनका अंश मात्र भी रेलकी यात्रामें मिलना संभव नहीं था। पहले ट्रेनका प्रवास कुछ कम नहीं किया था, लेकिन अैसे अनुभवोंका दर्शन अुसमें नहीं हो सका था।"

www.vinoba.in

विनोबाजीकी लोकसाधना

भीतर जिस बरामदेमें विनोबाकी चारपायी रखी गयी थी, वहां दीवार पर हनुमानकी अेक तसवीर लग रही थी — प्रेम और भक्तिभावसे परिपूर्ण विशाल मुद्रा, कीर्तन-रंगमें रमे हुअे चैतन्य महाप्रभुकी याद दिलानेवाली। बहुत देर तक विनोबा अिस तसवीरको निहारते रहे। अुनकी खुदकी मुद्रा पर भी अिन दिनों अुनकी भीतरी सकल कल्याणकारी भावनाका तेज प्रतिबिंबित हो रहा था। तसवीर देखनेमें विनोबा ध्यानमग्न हो गये।

अिस प्रदेशसे अेकरूप होनेकी अुनकी अनेकविध प्रक्रियायें देख कर अचंभा होता है। नित्य तेलगू गीता और पोतना-भागवतका स्वाध्याय तो बड़े स्वरसे चलता ही है, मानों सारी शुभ-भावनाओंका प्रकट आवाहन हो रहा है। बातचीतमें यद्यपि स्वयं तेलगू नहीं बोल पाते, लेकिन बोलनेवालेसे तो तेलगूमें ही बोलनेके लिअे कहते हैं। गांवमें पहुंचने पर अकसर घर-घर हो आते हैं। रसोअी देखते हैं। पूजा देखते हैं। पालना देखते हैं। गाय-बैल और सारा जीवन ही निहार लेते हैं। प्रयोगशालामें वैज्ञानिक किसी नतीजेकी खोजमें प्रयोग-मग्न रहता है, अुसी अेकाग्रतासे अिस लोकांतमें भी वे अेकांतका अनुभव कर लेते हैं।

हमने अूपर कहा ही है कि यहां लंबाड़ोंकी बस्ती ज्यादा थी। वे लोग मिलने भी आये थे। राजस्थानसे ये लोग गिरोह बनाकर व्यापार आदिके लिअे निकले हुअे हैं। बरसोंसे अिधर बसे हैं, परन्तु रहन-सहन अभी तक सब सुरक्षित रखा है। हममें से जो लोग राजस्थानी बोल लेते थे, अुन्होंने अुनसे अुनकी बोलीमें ही बातचीत की। थोड़ी देर बाद करीब तीस-चालीस लंबाड़ी बहनें आयीं। घाघरा, ओढ़नी, और अपने रीति-रिवाजके अनुसार अुत्तमसे अुत्तम शृंगार किये सब अेक युनिफॉर्ममें सजी हुअीं। आंगन काफी बड़ा था। अूंचे स्वरमें अुनका गान शुरू हुआ और मुक्त मनसे नृत्य।

विनोबाने अुन बहनोंसे तथा अुनके साथ आये हुअे पुरुषोंसे भी अुनके रहन-सहन, रीति-रिवाज आदिके बारेमें बातें कीं। कम्युनिस्टोंको आश्रय न देनेके बारेमें भी साफ शब्दोंमें समझाया। कुछ कार्यकर्ताओंने अपनी कठिनाअियां रखीं। अुनका कहना था कि कम्युनिस्ट जब जबरदस्तीसे पेश आते हैं, तब क्या किया जाय?

आधुनिक वामनावतारका जन्म

शामकी प्रार्थनामें दिन भरकी चर्चाका सार बताते हुअे विनोबाने कअी महत्त्वकी बातें कहीं। परन्तु अुनके दिल पर सवेरे अुस मुसलमान भाअीने जो जमीन दी थी, अुसका असर था और यहां भी लोगोंसे विनोबाने जमीन मांगी, तो लोगोंने जमीन देना शुरू किया था। मकान-मालिकने पचीस अेकड़ दिये। और भी लोगोंने थोड़ा-थोड़ा दान दिया — और कल सवेरे तक विनोबाजी यहांके लोगोंसे जमीन मांगने और लेनेवाले थे ही। तो यह भूदान मांगने और पानेका जो वातावरण पिछले दो-चार दिनोंसे बनता जा रहा था, अुसमें से अुन्हें अेकाअेक बलिराजासे त्रिपाद भूमिका दान मांगनेवाले वामनका स्मरण हो आया और आजकी प्रार्थनामें अुन्होंने सहज-भावसे कह दिया — 'आज मैं वामनावतार हो गया हूं — तीन कदम दोगे, तो भी बस है।' वामनके तीन कदमोंमें सारा त्रिभुवन समा गया था। विनोबाका तीन कदम भूमि मांगना क्या अुसी तरह सांकेतिक नहीं था?

दा० मूं०

सरदार पटेलके भाषण
संपादक: नरहरि परीख, अुत्तमचन्द शाह
अनु० रामनारायण चौधरी
की० ५–०–० डाकखर्च ०–१३–०
नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद–९

www.vinoba.in

श्री कुमारप्पा अभिनन्दन-ग्रंथ

आगामी ४ जनवरी, १९५२ श्री जो० कॉ० कुमारप्पाकी ६० वीं वर्षगांठका दिन है। यह दिन अुनकी हीरक-जयन्तीके रूपमें मनानेका आयोजना हुआ है। अिस दिन अुन्हें अेक अभिनन्दन-ग्रंथ भेंट किया जायगा। ग्रन्थकी पृष्ठ संख्या ४०० है और अंग्रेजीमें अुसका नाम है 'The Economics of Peace: the Cause and the Man.' ग्रन्थका संपादन श्री अेस० के० जॉर्ज और श्री जी० रामचन्द्रन्ने किया है। श्री कुमारप्पाके जीवन और अुनकी सेवाओंसे जिनका निकट परिचय रहा है, अैसे अनेक मित्रोंका सक्रिय सहयोग अुसमें प्राप्त हुआ है। सामान्य अभिनन्दन-ग्रंथोंकी तरह अिस ग्रन्थकी रचनाका अुद्देश्य व्यक्तिका यशोगान नहीं है, जैसा कि अुसके नामसे प्रगट है। संपादकोंका प्रयत्न शांतिके अर्थ-शास्त्र पर अेक प्रामाणिक ग्रन्थ देनेका रहा है। सारा गांधीवादी अर्थशास्त्र दरअसल शांतिका अर्थशास्त्र है और श्री कुमारप्पा अिस विषयके योग्यतम और अत्यन्त प्रभावशाली प्रवक्ताओंमें से हैं। ग्रन्थके अेक हिस्सेमें श्री कुमारप्पाका जीवन-परिचय करानेवाले लेख अवश्य रहेंगे, पर अधिकतर हिस्सा सीधा शांतिके अर्थशास्त्र पर ही होगा। सम्पादक अिस बातकी पूरी कोशिश कर रहे हैं कि ग्रन्थ भारतके और दुनियाके रचनात्मक कार्यकर्ताओं और शांति-वादियोंके लिअे स्थायी लाभकी चीज बने।

ग्रन्थके निम्नलिखित विभाग हैं: —

१. जीवन संबंधी लेख। अिस विभागके छः खंड होंगे — (अ) बचपन और युवावस्था, (आ) गांधीजीसे पहली भेंट, (अि) गुरुके रास्ते पर, (अी) रचनात्मक कार्यकर्ताके रूपमें, (अु) अभी भी विद्रोही तथा (अू) व्यक्तित्व और स्वभाव।

२. श्री कुमारप्पाके भाषणों और लेखोंके अंश। अिसके तीन खंड होंगे — (क) धार्मिक, (ख) आर्थिक और (ग) राजनीतिक।

३. सर्जक क्रान्ति — अिसमें चरखा संघ, ग्रामअुद्योग संघ, हरिजन सेवक संघ, हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, कृषि-गोसेवा विभाग, हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, और कस्तूरबा स्मारक ट्रस्ट, अिन रचनात्मक कार्यकी संस्थाओंके विकासका अितिहास रहेगा।

४. समस्याओंका विवेचन — अिस खंडमें देशकी प्रमुख आर्थिक समस्याओं पर प्रसिद्ध रचनात्मक कार्यकर्ताओं और लेखकों द्वारा लिखित लेख होंगे।

५. जीवन-प्रसंग और मित्रों और प्रशंसकोंके संदेश।

ग्रन्थ लगभग आधा छप चुका है। कहनेकी जरूरत नहीं कि पुस्तकमें मगनवाड़ीके हाथ-कागजका अुपयोग हुआ है। ग्रन्थमें कअी सुन्दर तस्वीरें भी दी गयी हैं। छपाअी हिन्दुस्तानी छापघर, काकावाड़ी, वर्धामें हुअी है। गांधी-विचार-परिषदके श्री रवीन्द्र वर्माने काफी समय देकर श्री कुमारप्पाके भाषणों और लेखोंका अनुशीलन किया और अुनमें से आवश्यक अंशोंका संकलन किया। यह सामग्री ग्रन्थके करीब १०० से भी ज्यादा पृष्ठोंमें संगृहीत हुअी है। ग्रन्थका मूल्य १० रु० है। ग्रन्थके ग्राहकोंसे निवेदन है कि वे अपना आर्डर और ग्रंथकी कीमत पहलेसे ही भेज दें। जनवरी १९५२ के पहले सप्ताहमें ग्रन्थ बिक्रीके लिअे तैयार हो चुकेगा।

श्री कुमारप्पा चीनसे जापान चले गये थे। अभी जापानमें ही वहांकी खेती और गृह-अुद्योगोंका अध्ययन कर रहे हैं। अुन्होंने तारसे सूचित किया है कि वे २७ दिसम्बर तक यहां आ जायंगे, यानी अपनी ६०वीं जन्म-तिथिसे अेक सप्ताह पूर्व।

(अंग्रेजीसे) जी० रामचन्द्रन्

कताअीके साथ बुनाअीको जोड़िये

खादी तैयार करनेमें वक्तकी बचत हो, अिसलिअे औजारोंमें सुधार, कच्चे मालकी अच्छाअी, हस्त कौशल्यका विकास, कपड़ेकी मजबूती और प्रक्रियाओंकी बचत, अिन पांच पहलुओं पर सोचा जा सकता है। अिस लेखमें पांचवें पहलूके अेक अंग पर सोच-विचार करना है।

आज जिस तरीकेसे हम खादी बना लेते हैं या बनवाते हैं, अुसमें ३ प्रक्रियाओंसे बचना संभव दीखता है। रूअीको पक्की गांठोंमें दबाना और फिर अुसे धुननेमें ज्यादा वक्त लगाना, सूत परेतकर गुंडी बनाना और फिर अुसे खोलने बैठना, तथा तानेको मांड़ी लगाना और कूंचीसे रगड़कर पायी करना। अिन तीनोंमें से अभी हम सूत परेतकर खोलनेकी प्रक्रियासे बचनेका विचार करेंगे।

सामान्यतः अेक गुंडी परेतनेमें सात-आठ मिनट तो लग ही जाते हैं। फिर अुसे खोलनेमें भी कमसे कम अुतना ही वक्त या कभी-कभी अिससे दूना वक्त लग जाता है। यानी परेतने और खोलनेमें अेक गुंडीके पीछे १५ से २० मिनटका वक्त तो लग ही जाता है। अेक वर्गगज कपड़ेमें यदि चार गुंडी सूत लगता है, तो अेकसे सवा घंटा वक्त अुसके परेतने-खोलनेमें लग जाता है। सामान्यतः बारह-तेरह घंटेमें चार गुंडी कातकर अेक वर्गगज कपड़ा बनाया जा सकता है। अगर परेतने-खोलनेकी प्रक्रिया रद की जा सके, तो खादी बनानेमें फी वर्गगज अेकसे सवा घंटेकी बचत होगी यानी ८ से १० प्रतिशत वक्त बचेगा।

यह कल्पना नयी नहीं है। हिन्दुस्तानमें जब खादीका अुद्योग मृतवत् नहीं हुआ था, तब अैसे कअी तरीके चलते थे। कहीं-कहीं कातनेवाले गुंडीके बदले कुकड़ी ही बेचते थे, तो कहीं तानी ही बेचते थे। कहीं-कहीं कातनेवाले खुद ही अपना ताना बनाकर बुन लेते थे। मगर जैसे-जैसे समाजमें व्यापारी तत्त्व बढ़ता गया, वैसे-वैसे प्रक्रियाओंका स्वावलम्बन छूटता गया और पैसे कमानेकी कोशिशमें तरीके भी बदलते गये। अुत्पादनके कामोंमें टुकड़े होते गये।

हमें सोचना यह है कि क्या यह टुकड़ोंका तरीका हर हालतमें अच्छा है या अुसे कहीं-कहीं जोड़ देना अच्छा है? किसी अेक जगह कातना और किसी दूसरी जगह बुनना हो, सूत दूर-दूर भेजना हो, तो गुंडी बनाना अनिवार्य हो जाता है। मगर 'पराया कपड़ा' छोड़ कर हमें तो अपने ही हाथोंसे अपने ही घरोंमें या पड़ोसीसे ही कपड़ा बना या बनवा लेना है। तब गुंडी बनानेकी और अुसके लिअे ८-१० प्रतिशत वक्त बरबाद करनेकी क्या सचमुच जरूरत है? अगर अपने ही यहां या पड़ोसमें कपड़ा बनवा लिया जाय, तो यह प्रक्रिया छोड़ी जा सकती है, अुतना वक्त बचाया जा सकता है। अितना ही नहीं, अिस तरह खुद बुन लेने या बुनवा लेनेसें व्यवस्था खर्च भी बच सकता है। दोनों बचत मिला कर सहजमें खादी २५ प्रतिशत सस्ती पड़ेगी।

लेकिन अितनी जानकारी होते हुअे भी आज हम दूसरे रास्ते चल रहे हैं। क्योंकि व्यापारी तत्त्वके कारण विकास पाये हुअे तरीके खादीके क्षेत्रमें भी अपना प्रभुत्व अब तक रखते आये हैं। अुनके प्रभावसे हम अभी छूट नहीं सके हैं। अिसलिअे अूपरका गणित हमें आकर्षित नहीं कर सका है। पर जैसे-जैसे हम वस्त्र-स्वावलम्बन और अुसके मूल हेतुकी ओर अग्रसर होते जा रहे हैं, वैसे-वैसे अूपरकी बातका मूल्य समझमें आ रहा है। यानी बुनाअीकी प्रक्रियाको कताअीके साथ जोड़नेकी अिच्छा तीव्र हो रही है।

कताअीके साथ बुनाअीको जोड़नेका सवाल अब हमारे सामने दूसरे रूपमें भी आ रहा है। वह है खादी कारीगरीमें 'जीवन-वेतन' का सवाल। सन् १९३५ में चरखा-संघने कताअी जैसी अल्प अुत्पादक प्रक्रियामें भी जीवन-वेतनके सिद्धांतकी प्रतिष्ठा की। मगर पैसे पर आधारित अिस जमानेमें हमने देखा कि आज अुस सिद्धांत पर चलनेकी खादीकी शक्ति हमारी कोशिशोंके बावजूद बढ़ी नहीं मगर घटी है। अर्थप्रधान पद्धति पर कुठाराघात करनेके लिअे पूज्य विनोबाजीने "वित्त छेदन" और "कांचन मुक्ति" की भाषा और विचार हमारे सामने रखा है। वैसी क्रांति खादीमें जीवन-वेतन या अुसका लाभ पानेकी शक्ति अवश्य बढ़ा सकेगी। मगर अिस दरमियान दूसरे जितने भी तरीके हम अिसके लिअे आजमा सकें, हमें आजमा कर देखने चाहियें। खास कर अैसे तरीके जो अर्थका प्रभुत्व घटनेके बाद भी अुपयोगी हों।

रोजीके लिअे कातनेवालेको जीवन-वेतन पानेके लिअे कपड़े तककी सारी प्रक्रियायें करनेको तैयार किया जाय, यह अेक आजमाने लायक तरीका है। यह तरीका आजकी हालतमें भी अुपयोगी साबित हो सकता है और अर्थ-क्रांतिके बाद भी। अगर कातनेवाले बुनाअी तकका काम करें, तो अुन्हें खादीके आजके दामोंमें ही फी घंटा अेक आनेकी जगह करीब डेढ़ आना मिल सकता है। खुद बुन लेनेके कारण कुछ प्रक्रियायें तो अुन्हें करनी ही नहीं पड़ेंगी और जो करनी पड़ेंगी, अुनकी मजदूरी कताअीकी मजदूरीसे ज्यादा रहती है। अिसका लाभ भी अुन्हें मिलेगा। खादीको विशेष महंगी किये बिना जीवन-वेतन पानेकी दृष्टिसे भी बुनाअीको कताअीके साथ जोड़ना निहायत जरूरी दीखता है। अिसमें खादीके मूल तत्त्वके साथ-साथ वक्तकी राष्ट्रीय बचत भी होती है।

कातनेवाला बुनाअी भी करे, यह विचार अव्यवहार्य मानकर ही अैसी कोशिश नहीं की गअी है। मगर सारे खादी-विचारको ही "अव्यवहार्य" की अुपाधि मिल चुकी है। अिसलिअे हमें आजमा कर देखना यह चाहिये कि यदि खादी बनानेसे वक्त बचता है तो क्यों न बचाया जाय। अुससे तो खादीकी "व्यवहार्यता" ही बढ़नेकी संभावना है।

सारे कातनवाले शायद अेकदम बुनाअी नहीं कर सकेंगे। अगर बुनेंगे भी तो शायद सारी किस्में नहीं बुन सकेंगे। मगर अिस डरसे कातनेवाले बुनाअी ही शुरू न करें, अैसा नहीं सोचना चाहिये। वे जिस तादादमें और जिस किस्मकी बुनाअी कर सकें, अुसे शुरू करनेका विचार रूढ़ करना चाहिये और वैसा प्रयत्न करना चाहिये।

खादीके अुत्पत्ति केन्द्रोंमें कअी जगह अिस तरहकी शुरुआत करना संभव है। वस्त्र-स्वावलम्बी कातनेवालोंमें जहां कताअी-मंडल बन चुके हैं और छोटेसे समूहमें मिलकर काम होता है, वहां भी यह तरीका रूढ़ हो सकता है। खादी-विद्यालयोंमें भी यह तरीका आजमाया जा सकता है। और पाठशालाओंमें तो यह बहुत ही फायदेमंद साबित हो सकता है।

अिस तरीकेसे सूत-सुधार आदि कुछ दूसरे लाभ भी होंगे। अुसकी चर्चा यहां छोड़ दी है।

कपास या रूअीसे पूरी क्रिया अेक ही जगह करनेमें स्थानिक साधन और औजारोंमें कुछ विविधता हो सकती है। अुसका रहना ठीक ही है। मुख्य बात है खादी बनानेमें संभव हो अुतनी प्रक्रियायें घटाकर वक्त बचाना और आजीविकाके लिअे कातनेवालोंकी आमदमें तथा स्वावलम्बी कातनेवालोंके स्वावलम्बनमें वृद्धि करना।

सेवाग्राम खादी-विद्यालयमें कुछ कार्यकर्ताओंने यह प्रयोग शुरू किया है। अुसके अनुभव अगले लेखमें।

सेवाग्राम, ७-११-'५१

कृष्णदास गांधी

www.vinoba.in

सर्वोदय-यात्रा

गांधीजीके निर्वाण-दिवस ३० जनवरीको देश भरमें श्रद्धांजलीकी योजना बनायी जाती है। ता० १२ फरवरीको जहां-जहां अस्थि-प्रवाह हुआ था, वहां सर्वोदय मेलेका आयोजन किया जाता है। बहुतसे स्थानोंमें ३० जनवरीसे १२ फरवरी तक सफाओ आदि प्रोग्रामके लिअे सर्वोदय पक्ष भी मनाया जाता है। कुछ स्थानोंमें कुछ लोग अपने स्थानसे सर्वोदय मेले तक पैदल यात्रा कर सूतांजली अर्पित करते हैं। अिस प्रकार स्थान-स्थान पर लोग अपने ढंगसे सर्वोदय पक्ष मनाते हैं। अच्छा होगा अगर सेवकोंके लिअे अिस पक्षकी कुछ निश्चित योजना बन सके।

पिछले साल बिहार, अुत्तरप्रदेश और केरलमें सर्वोदय-यात्राके कार्यक्रम रखे गये थे। यात्राका परिणाम अच्छा आया। अिससे मालूम होता है कि अगर देश भरमें अैसी यात्राका कार्यक्रम चलाया जाय, तो सर्वोदयके विचार और आचारका प्रभावपूर्ण प्रचार हो सकेगा और जनताकी दृष्टि हमारी योजना और कार्यक्रमकी ओर आकर्षित होगी।

योजना निम्न प्रकार है:

जहां कहीं भी सर्वोदयके विचार रखनेवाले सेवक व्यक्तिगत या संस्थागत रूपसे काम करते हों, वे अपने आसपासके तथा जानकार क्षेत्रमें मित्रोंको आमंत्रित करें कि वे सर्वोदय-यात्रामें शामिल होनेके लिअे अपना नाम दें। जितने नाम आवें अुनकी अेक सभा बुलाकर अुन्हें अलग-अलग टोलीमें बांट दें। प्रत्येक टोलीमें ४ या ५ सदस्य हों। ये सदस्य आपसमें नजदीकके रहनेवाले हों तो अच्छा होगा। अुन्हें यात्राकी पूरी योजना समझायी जाय।

प्रत्येक टोली किसी अेक गांवसे, जहां तक हो सके, अपने क्षेत्रके सर्वोदय मेलेकी दिशामें ही यात्रा करे। यात्राका मार्ग और किन किन गांवोंमें पड़ाव रखा जायगा, यह पहलेसे ही निश्चित हो जाना चाहिये। पड़ाव अैसे गांवोंमें डालनेकी कोशिश की जाय, जहांके ग्रामवासी लोगोंमें कुछ दिलचस्पी हो और वे यात्रियोंका स्वागत करनेके लिअे तैयार हों। हर टोलीके सेवक २६ जनवरी तक गांवमें घूमकर जिस गांवमें पड़ाव होगा, अुसके आमंत्रणकी व्यवस्था कर लें और हो सके तो अुस गांवमें ३ व्यक्तियोंकी यात्रा-समिति भी बना दें, जो यात्रियोंके लिअे काम और अुसके साधनकी व्यवस्था पहलेसे ही कर रखे।

३० तारीखको सब लोग अपने-अपने स्थान पर निर्वाण-दिवस मनानेके बाद ३१ को किसी अेक निश्चित स्थान पर अेकत्रित हो जायें। दोपहर बाद यात्रा करके तीन साढ़े तीन बजे करीब प्रथम पड़ावके गांवमें पहुंचना चाहिये। टोलीके अेक सदस्य पहले ही अुस गांवमें पहुंचकर सारा अिन्तजाम देख लें और यदि अुसमें कमी हो तो अुसे पूरा करानेकी कोशिश करें। गांवकी यात्रा-समितिको चाहिये कि वह सूत्र-यज्ञमें शामिल होनेवालों तथा सूतांजली देनेवालोंको तैयार रखे और सफाओ तथा श्रम-यज्ञके लिअे फावड़ा, टोकरी आदि आवश्यक सामान तथा यज्ञमें शामिल होनेवाले जवानोंके नाम भी तैयार रखे। टोलीके जो भाओ पहले पहुंचेगें, वे अिन तैयारियोंको देखकर कमी पूरी करनेमें गांववालोंकी मदद करेंगे।

गांवमें पहुंचकर थोड़ा आराम करनेके बाद ४ बजेसे ५ बजे तक सूत्र-यज्ञ, सूतांजली समर्पणके बाद सामूहिक प्रार्थना की जाय। प्रत्येक प्रदेशके लोगोंको चाहिये कि यह प्रार्थना छपवाकर यात्रा-टोलीवालोंको दे दें।

प्रार्थनाके बाद सर्वोदय विचार संबंधी प्रवचन हों। ये प्रवचन प्रांतके जिम्मेदार व्यक्ति द्वारा लिखित होने चाहियें, ताकि गैरजिम्मेदार प्रवचनके कारण कहीं बुद्धिभेद न हो सके। प्रवचन अैसा हो कि १५-२० मिनटमें पढ़ा जा सके। जिनमें शक्ति होगी वे प्रवचन पढ़नेके बाद विस्तृत व्याख्या कर सकेंगे, नहीं तो अुसे केवल पढ़ देंगे। अिस साल यह प्रवचन भूमियज्ञके बारेमें हो तो अच्छा होगा। अगर श्री विनोबाजीसे अेक संदेश मिल सके, तो अुसे पहले पढ़नेके बाद प्रवचन पढ़ना चाहिये।

सभाकी समाप्तिके बाद टोलीके प्रत्येक सदस्य भिन्न-भिन्न घरोंमें मेहमान होंगे और रातको अुस घरके लोगोंके साथ सर्वोदयके विचार और कार्यक्रमके बारेमें चर्चा करेंगे।

दूसरे दिन सबेरे पांच साढ़े पांच बजेसे १ घंटे तक प्रभातफेरी होनी चाहिये। प्रभातफेरीके गाने प्रांतके जिम्मेदार लोगोंको पहलेसे ही निश्चित कर देने चाहियें। ये गाने यात्रा-टोली और पड़ावके गांववालोंको बहुत पहलेसे ही भेज देने चाहियें, ताकि वे अुनका अभ्यास कर सकें। अिस साल ये गाने भी अगर स्थानीय देहाती भाषामें भूमिदान-यज्ञके लिअे अपील करनेवाले बनाये जा सकें तो अच्छा है। कोशिश करने पर हर जगह अैसे गाने लिखनेवाले मिल जायंगे। प्रभातफेरीके बाद ३ घंटा श्रम-यज्ञ होना चाहिये। अिस श्रम-यज्ञके सिलसिलेमें गांवकी सफाओ, मिश्रखादके गड्ढे, आदर्श पेशाब और टट्टी-घर बनानेका काम होना चाहिये। गांवके अधिक-से-अधिक लोगोंको अिस श्रम-यज्ञमें शामिल करनेकी कोशिश करनी चाहिये।

अिसके बाद स्नान-भोजन आदि करके और कुछ आराम लेकर अगले पड़ावके लिअे प्रस्थान करना चाहिये।

अिस प्रकार ११ से १२ तारीख तक पड़ावोंका कार्यक्रम समाप्तकर जो लोग अस्थि-प्रवाहके स्थान पर मेलेमें शामिल होना चाहें, वे वहांसे किसी भी अुपलब्ध यातायातके साधन द्वारा ता० १२ को मेलेके स्थान पर पहुंच सकेंगे। १२ दिनमें जो सूताजंलीकी गुंडियां मिली होंगी, अुनको सर्व-सेवा-संघकी हिदायतके मुताबिक पूरे विवरणके साथ वहां पर समर्पण करना चाहिये।

सेवाग्राम, १-१२-'५१ **धीरेन्द्र मजूमदार**

महादेवभाओकी डायरी

[तीसरा भाग]

संपा० नरहरि परीख

अनु० रामनारायण चौधरी

कीमत ६–०–० डाकखर्च १–१–०

अेक धर्मयुद्ध

लेखक: महादेव देसाओ

अनु० काशिनाथ त्रिवेदी

कीमत ०–१२–० डाकखर्च ०–३–०

नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद–९

विषय-सूची

		पृष्ठ
सरदारश्रीकी पहली संवत्सरी	कि०घ० मशरूवाला	३६१
दरबार गोपालदास	कि० घ० मशरूवाला	३६१
विनोबाकी अुत्तर भारतकी यात्रा — ७	दा० मूं०	३६२
बहिष्कार आन्दोलनकी ओर	धीरेन्द्र मजूमदार	३६३
मध्यम वर्गको सन्देश	धीरेन्द्र मजूमदार	३६४
कांग्रेसके विरोधकी माया	मगनभाओ देसाओ	३६४
विनोबाकी तेलंगाना-यात्रा : ९	दा० मूं०	३६५
श्री कुमारप्पा अभिनन्दन-ग्रन्थ	जी० रामचन्द्रन्	३६६
कताओके साथ बुनाओको जोड़िये	कृष्णदास गांधी	३६७
सर्वोदय-यात्रा	धीरेन्द्र मजूमदार	३६८

www.vinoba.in